

॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

२६१

श्रीमन्महामाहेश्वराचार्यवर्य-  
श्रीमदभिनवगुप्तपादाचार्यविरचितः

# तन्त्रसारः

‘नीरक्षीरविवेक’-हिन्दीभाष्यसंवलितः

प्रथमः खण्डः

(अध्यायाः १ - ७)

भाष्यकार

डॉ० परमहंस मिश्र



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

## विषयानुक्रमः

आमुख—डॉ० जयदेव सिंह	९—१२
प्रास्ताविक—डॉ० ब्रजवल्लभ द्विवेदी	१३—१४
नीर-क्षीर-विवेक-विमर्श—'हंसः'	१५—२१

**प्रथममाह्निकम् [ पहला आह्निक ]** विज्ञानभेदप्रकाशप्रकरण—पृ० १-२७

मङ्गलाचरण-विमलकला का स्वरूप १, अभिनवार्थ २, मातृ-पितृ-स्मरण २, हृदय ३, तंत्रसार की रचना ४, गुरुस्मरण ४-५, पूजा, मङ्गल-श्लोकों के मुख्य संकेत ६, ज्ञान-अज्ञान ६-१३, शास्त्र का महत्त्व १३-१४, अन्यशास्त्रों की अपेक्षा परमेश्वर शास्त्रोंकी प्रामाणिकता १४-१६, षडर्ध (त्रिक-प्रत्यभिज्ञा) दर्शन, मालिनो विजय तंत्र १६-१७, ज्ञेयतत्त्व १८-१९, उपोद्धात १९, परमोपादेय प्रकाश १९-२०, प्रकाशकीस्वतंत्रता, मुख्य शक्तियाँ, अणु २१-२४ प्रकाश का प्रकाशन २५-२७, निष्कर्ष २७

**द्वितीयमाह्निकम् [ दूसरा आह्निक ]** अनुपायप्रकाश प्रकरण—पृ० २८-४५

अनुपाय २८, तत्रार्थ २८ नित्योदितसमावेश २९-३१, शक्तिपात ३०, विवेचन और साधना ३२, ज्ञप्ति ३२, अनुप्रवेश की प्रक्रिया ३३-३४, चिन्मात्र तत्त्व, उपाय ३४-३८, बिम्बप्रतिबिम्बवाद ३८-४०, यन्त्रणातन्त्र से मुक्ति, ध्यान ४१, चर्याक्रम ४३, अनुपाय प्रकाश ४३, उपाय-अनुपाय-दृष्टान्त ४४, स्फुरत्ता ४४, अनुत्तरदशा ४५

**तृतीयमाह्निकम् [ तीसरा आह्निक ]** शाम्भवोपायप्रकाश प्रकरण पृ०-४६-९०

निर्विकल्प भैरवसमावेश, शाम्भवोपाय अवस्था ४६-४७, उपदेश ४८, प्रतिबिम्ब की परिभाषा ४८-५०, पञ्चतन्मात्राओं की अमुख्यता ५०-५२, बिम्ब ५२-५३, विश्व चैतन्य की अभिव्यक्ति ५२-५७, आमर्श ५७, असांकेतिक चिन्मात्रस्वभावतामात्र नान्तरीयक परनादगर्भ आमर्श ५७-५९, आमर्शप्रक्रिया और परमेश्वर की तीन शक्तियाँ ५७-६०, सूर्यात्मक परामर्शत्रय ६०-६१, सोमात्मकपरामर्शत्रय ६०-६२, कर्माशका अनुप्रवेश ( 'र' श्रुति- 'ल' श्रुति ) ६०-६४, ऋ ऋ लृ लृ ६५, संयुक्त स्वर ६४-६७, परामर्शोक्ति ६६ बीज ६५-६८ मतृका, व्यंजन ( योनि ) ६८-७२, कुलेश्वर, कौलिकी शक्ति, वर्गपरामर्श, आणव, शाक्त और शाम्भवविसर्ग ७२-७६ परामर्श विश्लेषण ७६-९० ।



चतुर्थमह्निकम् [ चौथा आह्निक ] शाक्तोपाय प्रकाश—पृ० ९१—१५०

विकल्प संस्कार, सत्तर्क, सदागम, सद्गुरूपदेश, विकल्पका बल, बन्धनकी अनुभूति, संसार प्रतिबन्ध हेतु, प्रतिद्वन्द्वी विकल्प, अभ्युदय हेतु ९१-९५, परमार्थ तत्त्व, वस्तुमात्र की व्यवस्था का स्थान, विश्व का ओज विश्व प्राण प्रक्रिया, अहम् की विश्वात्मकता और विश्वोत्तीर्णता, मायान्धों में सन्दिकल्प की अनुत्पत्ति ९५-९७, वैष्णव आदि विभिन्न मतवादियों का स्तर ९७-१०१, विकल्प संस्कार से स्वरूप में अनुप्रवेश १०१, परतत्त्व विषयक जिज्ञासा, द्वैतमें रहने की स्थिति को भङ्ग करने का आग्रह, परतत्त्व के समक्ष विपक्ष की महत्त्व हीनता, सत्तर्क का उदय, १०१-१०४ गुरु-आगम का निरूपक, समुचित विकल्पका उदय और आगम, सत्तर्क का लक्षण, भावनाकी परिभाषा १०४-१०६, सत्तर्क की साक्षात् उपायता, तप, यम, नियम, प्राणायाम आदि की वेद्य मात्र में स्थिति और संविद् में व्यापार का अभाव, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा और समाधिरूप योगाङ्गों में अभ्यास का महत्त्व, शिवात्मक परतत्त्वमें अभ्यास असम्भव, अभ्यास की परिभाषा, संविद् रूपता में आदान और अपसारण के अभाव के कारण अभ्यास व्यर्थ, तर्क की अनुपयोगिता १०६-११३, लौकिक व्यवहारमें अभ्यासका अर्थ, द्वैताधिवास की परिभाषा, स्वरूपाख्याति, विकल्प से द्वैत का अपसारण ११३-११५, परमार्थ का विश्लेषण-विकासोन्मुख-विकसत् और विकसित-स्व रूप का विवेचन, योगाङ्गों की साक्षात् अनुपायता ११५-११७ सत्तर्क साक्षात् उपाय, शुद्ध विद्या, याग ११७-१२०, लक्षण सहित होम, जप, व्रत १२०-१२३, योग, परमेश्वर का स्वभाव, पूर्णता, शक्ति, कुल, ऊर्मि, हृदय, सार, स्पन्द, विभूति, त्रीशिका, काली, कर्षणी, चण्डी, बाणी, भोग, दृक् आदि से अभिधीयमान परमेश्वर का स्वरूप १२३-१३१, पूर्णता-संवित्, असंख्य शक्तिसम्पन्न परमेश्वर की श्रीपरा शक्ति १३१-३२, श्रीपरापरा शक्ति, श्रीमदपरा शक्ति, शब्दान्तरों से उक्त कालकर्षणी पराशक्ति १३२-१३४, इन चार शक्तियों का सृष्टि, स्थिति और संहार से संगुणित १२ रूपों के आकलनका प्रकार १३४-१३९, श्रीकाली और उसका कर्तृत्व, कलन की परिभाषा, रहस्यों के गोपन और ख्यापन का दृष्टिकोण १३९-१४२, मिथ्यादर्शन का परित्याग, अनुभव-स्तोत्रका प्रसङ्ग, शुद्धि-अशुद्धि १४२-१४५, शुद्धि का सोदाहरण विवेचन, विधि और निषेध की अकिंचित्करता १४५-१४७, जडत्व निश्चय के

उपरान्त चैतन्यात्मक निश्चय से चिदात्मत्व की उपलब्धि, १४७-१४८, चिदात्मत्व निश्चय के प्रति सावधानता १४८, अध्यवसाय का प्रभाव १४८-१४९ पर तत्त्व के स्फुरण के अयोग्य भूमि १४९, परम शिव रूपी तरणि के किरणों से हृदयपद्म का विकास १४९, विमर्शभ्रमर १५०

**पञ्चममाह्निकम् [ पाँचवाँ आह्निक ]** आणवोपाय-प्रकाश—पृ० १५१-१८४

विकल्पों का संस्कार, शाक्तज्ञान का अविर्भाव, उपायान्तर की अपेक्षा और आणव ज्ञानका आविर्भाव १५१-१५४, बुद्धि, उच्चारणात्मक प्राण, उच्चारण, सूक्ष्म प्राण, देह, करण, बाह्य उपाय १५४-१५५, ध्यान, महाभैरवाग्नि, द्वादश चक्र, बाह्यात्मक ग्राह्य में विश्रान्त रूप का चित्तन १५६-१५९ सोमरूप सृष्टिक्रम, अर्करूप स्थितिक्रम, संहाररूप वह्निक्रम, अनुत्तरभाव का आपादन १५९-१६१, अनवरत ध्यान, भैरवीभाव, ध्यान के अन्य विधान १६१-१६४, उच्चार, प्राण, अपान, समान, उदान और ध्यान के उदय क्रम से अवच्छेदों-आवरणों का विनाश १६४-१६७, निजानन्द, निरानन्द, परानन्द ब्रह्मानन्द, महानन्द और चिदानन्द नामक ६ आनन्द भूमियों का विवरण, जगदानन्द १६७-१७०, उच्चार का रहस्य और विकल्पों का संस्कार, प्रवेशतारतम्य की ५ अवस्थायें १७०-१७२, प्रागानन्द, उद्भव, कम्प, निद्रा, घूर्ण ( महाव्याप्ति ) तुर्यातीतान्त भूमियाँ, त्रिकोण, कन्द, हृदय, तालु, ऊर्ध्व-कुण्डलिनी चक्र १७२-१७५, लिङ्गत्रय ( गलिताशेषवेद्य, उन्मिषद्वेद्य और उन्मिषितवेद्य स्पन्दन ) योगिनी हृदय, यामल रूपतोदय १७५-१७७, विमर्शधाम में आरोहणकी प्रक्रिया के आन्तरलोक १७७-१७८, सूक्ष्मप्राणत्मा वर्ण, वर्णका लक्षण, वर्णका रहस्य १७८-१८१, वर्णविधि, आन्तरवर्ण उपक्रम, उपसंहार १८२-१८४

**षष्ठमाह्निकम् [ छठाँ आह्निक ]** बाह्यविधि कलाध्वा-प्रकाश—पृ० १८५-२३२

स्थानप्रकल्पन, त्रिधा ( प्राणवायु-शरीर और बाह्य ) स्थान, कालकी परिभाषा, काली नामक शक्ति, प्राणवृत्ति १८५-१८७, संविद् का प्रमेय-रूपग्रहण, नभ, देह के चैतन्याभास की हेतु, क्रियाप्रधाना प्राणव्यापार-रूपासंविद् १८७-१८९, क्रियाशक्तिरूप, कालाध्वा, मूर्तिवैचित्र्यरूप देशाध्वा, कालाध्वामें वर्ण, मन्त्र और पद की स्थिति, तत्त्व पुर और कला, देहमें ओतप्रोत प्राण १८९-१९१, प्राणके संप्रेरक, ३६ अङ्गुलका प्राणचार, प्राणका निर्गम और प्रवेश, घटिका, तिथि, मास और वर्ष समूहात्मा काल, ११ अङ्गुलका चषक, ६० चषक की ७२ अङ्गुलकी घड़ी



१९१-१९५, मासोदय, रात्रि, दिन, तिथि १९५-१९७, प्राणार्क में अपान-चन्द्र की कलाओं का अर्पण, पक्षसन्धि, आमावस्य और प्रातिपद तुल्यार्ध, ग्रहण १९७-१९९, माया प्रमाता राहु, पारलौकिक फलप्रद काल, पूर्णिमा, पक्षसन्धि, सूर्य ग्रहण १९९-२०२ वर्षोदय, उत्तरायण और दक्षिणायन, गर्भ से उत्पत्तितक के ६ विकार २१२-२०५, चतुर्युग, मन्वन्तर, ब्राह्म-दिन, जनलोक और प्रलयाकल दशा, ब्राह्मी सृष्टि, ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र के आयुष्य २०६-२०७, शतरुद्र, ब्रह्माण्डविनाश, श्रीकण्ठनाथ २०७-२०९, गह्वरेश, प्राण प्रशम २१०-२११ सादाशिव दिन और रात, अनाश्रितदिन, सामनस्य काल, अशेष काल प्रसर के विलय का चक्र २११-२१३ अठारह गणित विधि, प्राण संविद्, उपाधि, चिन्मात्र स्पन्द, कालोदय २१३-२१५, प्राण के समान अपानमें भी कालोदय वैचित्र्य, शैशव आदि अवस्थाओंके कारण २१५-२१७, समान में कालोदय, पाँच संक्रान्तियाँ २१७-२२०, दक्षिण वाही प्लुवत् मध्याह्न, विषुवद् दिवस की १२-१२ संक्रान्तियाँ २२०-२२१, उदान और व्यानमें कालोदय, २२२-२२३ वर्षोदय, अयत्नज और यत्नज मन्त्रोदय, मन्त्रदेवताके साथ तादात्म्य २२३-२२६ सूक्ष्म और स्थूल प्राणचार, कालग्रास, एक मात्र सम्पूर्ण संवेदन २२६-२२७, संवेदन का भेदक काल, ज्ञान का क्षण, २२८-२२९, एकासी पदवाली मातृका शक्ति २३०, आत्म-प्रत्यभिज्ञान २३१, भैरवीभाव २३१-२३२, समस्त काल प्रसर, पवन और महेश्वर की तुलना २३२

सप्तममार्हकम् [ सातवाँ आह्निक ] देशाध्या—पृ० २३३—२

विश्रान्ति के क्रम में निर्भर परिपूर्ण संविद् की सम्प्राप्ति २३३-२३४, छत्तीसतत्त्वोंके विशेषज्ञों द्वारा विश्वोत्तीर्ण और विश्वमय संविद्का संवेदन प्रक्रिया ज्ञान आवश्यक, २३४-२३५, पृथ्वी तत्त्व, ब्रह्मलोक, शतरुद्रक्षेत्र, जलतत्त्व, दस-दस गुने अहंकार पर्यन्त तत्त्व, बुद्धितत्त्व, प्रकृति, प्रकृत्यण्ड २३५-२३७, पुरुषतत्त्व, मायाण्ड २३७-२३८, शुद्धविद्या से शक्त्यण्डक्षेत्र-तक का विस्तार, व्यापिनी शक्ति, उत्तर व्यापक पूर्व व्याप्य तत्त्व २३८-२३९, शिवतत्त्व की व्यापकता, मृत्यु के उपरान्त गतिका अधिकार २३९-२४०, आयतन और आयतन के अधिपति, निवृत्तिकला से कलनीय १६ पुरों वाला ब्रह्माण्ड २४१, जल, तेज, वायु और आकाश के गुह्याष्टक २४२-२४४, संविदनु प्रवेश २४६, परिशिष्ट २४७-२६४

॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

२६१

श्रीमन्महामाहेश्वराचार्यवर्य-  
श्रीमदभिनवगुप्तपादाचार्यविरचितः

## तन्त्रसारः

‘नीरक्षीरविवेक’-हिन्दीभाष्यसंवलितः

द्वितीयः खण्डः

( अध्यायः ८-२२ )

भाष्यकार

डॉ० परमहंस मिश्र

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी



## विषयानुक्रमः

शुभाशंसा—श्री पं० बदरीनाथ शुक्ल

पूर्व कुलपति

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

नीर-क्षीर-विवेक विमर्श—भाष्यकार

अष्टममाल्लिकम् [ आठवां आल्लिक ] तत्त्वाध्वा निरूपण ( तत्त्व स्वरूप प्रकाशन ) पृ० १—५०

विभवात्मक भुवनजालका परमशिवरूपत्व १—२ तत्त्वकी परिभाषा और कार्य कारण भाव, पारमार्थिक और सृष्टि २—४ 'कल्पित' और अकल्पित ४—६ पारमार्थिक कारण सामग्रीवाद, वस्तु स्वरूप निर्णय और कार्यका विजातीयत्व ६—८ संवेदन स्वातन्त्र्य स्वभाव परमेश्वर और कुम्भकार संविद्, मेरु-घटका दृष्टान्त ८—९ गोमय कीट ९—१० परमेश्वरकी पाँच शक्तियाँ—चित्प्राधान्यमें शिवरूपता, आनन्द प्राधान्यमें शक्तितत्त्वता, इच्छा प्राधान्य सदाशिव, ज्ञान-शक्ति प्राधान्य ईश्वर तत्त्व, क्रियाशक्ति प्राधान्य-विद्यातत्त्व १०—१२ तत्त्वेश्वर, अनुगतिविषय शुद्ध अध्वा, कर्त्ता शिव १२—१३ अशुद्ध अध्वाके सर्जक अनन्त-अघोरेण, अशुद्ध अध्वाके सृजनका उद्देश्य, अकर्मक अभिलाष, लोलिका, अपूर्णम्मन्यता रूप परिस्पन्द, कर्म और राग १३—१४ मल, परमेश्वरकी स्वात्म-प्रच्छादनकी इच्छा, विज्ञान केवल, ध्वन्सोन्मुख मल १५ प्रलय केवल, संसार वैचित्र्य भोगका निमित्त मलोपोद्बलित कर्म, अघोरेणकी सृष्टि और उद्देश्य, मलका प्रक्षोभ और ईश्वरेच्छा, १६—१७ अणु, अणुका चित् और अचित् रूप, माया, जड़ और व्यापक तत्त्व १७—१८ कलादि-धरान्त तत्त्वोंका द्वैरूप्य, माया—केवलान्वयी हेतु १९—२० सिद्ध, मायासे अक्रम और क्रम विश्वप्रपञ्च २१ प्रत्यात्म कलादिवर्ग भिन्न २२—२३, कला मायाका कार्य, किञ्चित्कर्तृत्वप्रद कला २४ माया पुरुष विवेक, मायोद्ध्वं स्थिति, प्रकृतिपुरुष विवेक, मल पुरुष विवेक, अज्ञका अकर्तृत्व २५—२७ अशुद्ध विद्या, बुद्धिप्रतिबिम्बित भाव, वैराग्य और अवैराग्य २७—२९ काल और नियतिके व्यापार, कलासे काल, विद्या, राग और नियतिकी



उत्पत्ति, पशु २९—३१ छःकञ्चुक, किञ्चिद्विशिष्टकर्तृत्व ३१—३३ सुख दुःख और मोह, प्रकृत सग, कला तत्त्वायत्ता सृष्टि ३३—३४ क्रम और अक्रमावभास सृष्टि, प्रक्षोभगत गुण तत्त्व ३४—३६ सांख्यसे अपरिदृष्ट गुणतत्त्व ३६—३७ बुद्धितत्त्व, अहंकार, सांख्यदृष्टि और शैव दृष्टिमें भेद ३७—३९ करण स्कन्ध, प्रकृतिस्कन्ध, सात्त्विक राजस तामस तीन भेद मन और ज्ञानेन्द्रियों की उत्पत्ति, मन और बुद्धि इन्द्रियाँ, ३९—४० श्रोत्र, घ्राण, कर्त्रंश-अहंकार, विद्या कलाके सन्दर्भमें अन्ध और पङ्क्तुका उदाहरण, ४१—४२ कर्मेन्द्रियपञ्चक, करणका कार्य, क्रिया, काणादितन्त्रका गुण ४३—४४ अनुसन्धि, वागिन्द्रिय, राजसस्कन्ध का उपश्लेष ४६—४७ भोक्त्रंशके आच्छादक, तम प्रधान अहंकारसे तन्मात्रायें, अक्षोभात्मक प्राग्भावि सामान्य, शब्दतन्मात्र, नभ, वायु ४६—४७ तेज, अप, गन्ध, धरणी, गुणका उत्कर्ष, शक्तितत्त्व ४७—४९ विद्यादि शक्त्यन्त प्रसर, स्वात्म संवित्के प्रसरका प्रकार, सकल तत्त्व परिव्याप्त सकल तत्त्वोत्तीर्ण, पर्यन्तधाम सर्वव्यापक परमशिव ४९—५०

**नवममाल्लिकम्** [ नवां आल्लिक ] तत्त्वाध्वा—तत्त्वभेद निरूपण प्रकरण पृ० ५१—८३

सात शक्तिमन्त, उनकी सात शक्तियाँ, पञ्चदशत्व, अपरा, परापर-शक्तियोंका अनुग्रह और इनका स्वात्मनिष्ठ शाक्त रूप ५१—५२ शक्तिमान् शिवका स्वरूप, प्रमातृभेद ५२—५३ शाक्तभेद ५३—५५ करणभेदका कर्तृभेदमें पर्यावसान, चित्स्वातन्त्र्यानन्दविश्रान्त एक प्रमाता, शिवशक्ति निष्ठ और शिवस्वभावविश्रान्त विश्व ५६—५८ भावकी वेद्यता पर विचार ५८—५९ अनन्तप्रमातृसंवेद्य शिवका एक ही रूप, अर्थक्रिया प्रकाशविमर्शोदय और पञ्चदशत्व ६०—६२ पन्द्रह प्रमाताओंके भेद ६२—६५ धरा प्रमाता ६६—६८ धराप्रमाताओंका चातुर्दश्य, एक प्रमाताकी प्राणप्रतिष्ठाकी दृष्टिसे विवेचना, तुष्टियोंकी संख्या एवं पाञ्चदश्य सिद्धान्त ६८—७२ ग्राह्यग्राहक संवित्तिमें सावधानता ७२—७३ तुष्टिपात ७३—७५ स्वप्न जाग्रत् और सुषुप्ति ७५—७६ प्रमेयप्रमाण और प्रमाता ७७—७८ तुर्य और तुर्यातीत दशायें ७८—८० प्रत्यभिज्ञावादियोंका पञ्चपदत्व ८०—८१ स्वात्मसत्ताकी अधिगतिका उपदेश ८१—८३



**दशमम् आह्निकम्** [ दसवाँ-आह्निक ] कलाध्व प्रकाशन ८४-९५

कलाकी परिभाषा ८४ निवृत्ति, प्रतिष्ठा, विद्या, शान्ता कलायें, पार्थिव, प्राकृत, मायीय नामक अण्डचतुष्टय ८५-८६ शान्तातीता, ३६ तत्त्व ८६-८८ सैंतीस और अड़तीसतत्त्व, आत्मकला, विद्याकला, शिवकला रूप त्रितत्त्वविधि ८८-९० छः भुवन-तत्त्व-कला-पद-मन्त्र और वर्ण अधवा ९०-९१ संग्रह श्लोक ९१-९३ प्राकृत श्लोकोमें शिवतत्त्व निरूपण ९३-९५

**एकादशमाह्निकम्** [ ग्यारहवाँ आह्निक ] दीक्षा—शक्तिपात प्रकाशन प्रकरण ९६-११७

अज्ञानमूलक संसार और शक्तिपात ९६-९८ भेदवादियोंके तर्क ९८-१०० अणु १००-१०१ भोगोत्सुक, भोगमोक्षोभयोत्सुकके ऊपर शक्तिपात १०१-१०२ नवधा शक्तिपात १०३-१०४ यियासु दीक्षा १०५-१०८ शक्तिपातमें, तारतम्य १०८-११० गुरु ११०-११३ तिरोभाव ११३-११४ इच्छावैचित्र्य और शक्तिपात, स्वात्ममें पंचकृत्य-कर्तृत्व, अखण्डभाव ११५-११६ निरपेक्ष शक्तिपात, ११६-११७

**द्वादशमाह्निकम्** [ बारहवाँ आह्निक ] स्नानप्रकाशन प्रकरण ११८-१२५ दीक्षाके पहलेके कर्त्तव्य (स्नान) ११८ शुद्धि, कालुष्य ११८-११९ अशुद्धि और उसका व्यपोहन, भेद, परमेश्वर समावेश ११९-१२१ आठ स्नानोंके मुख्यफल १२१-१२२ वीरसाधन मन्त्रचक्रपूजन १२२ बाह्य और आन्तर स्नान १२३-१२४ परमानन्द निमज्जन ही स्नान १२४-१२५

**त्रयोदशमाह्निकम्** [ तेरहवाँ आह्निक ] समयदीक्षा प्रकाशन १२६-१६२

यागस्थान, ध्येय तादात्म्य, विक्षेपका परिहार १२६-१२७ यागस्थानके बाहर सामान्य न्यास, मालिनीशक्ति १२७-१३० पूजाका उद्देश्य, यज्ञ और यज्ञकर्त्तृका आधार, शुद्धिक्रम, परमेश्वर रूपता १३०-१३२ प्रोक्षण, न्यास विधिसहित पूजन, यागगृहप्रवेश १३२-१३३ मध्य, ऊर्ध्व और अधः दिक् १३३-१३४ मूर्तिकृत दिग्भेद १३४-१३६ देहभाव दाहन, छः प्रकारके न्यास १३७-१३८ न्यासमें कारण—अधिष्ठान, पूजन १३८-१४० शूलाब्जन्यास १४०-१४१

व्यापिनी, समना, उन्मनाका विश्वमय भेद, विश्वभावापण, पूजन, ध्यान, जप, होम, द्वादशान्त त्रिशूल खेचरताकी प्राप्ति, १४२-१४४ अन्तर्याग, बहिर्याग १४४ अधिवासन, भूमिपरिग्रह अन्य विधियाँ, पूज-



पकरणयोग्यतार्पण, १४४-१४६ भूपरिग्रह, मन्त्रित कुम्भ १४६-१४७  
द्वितीयकलश, कलशमन्त्र १४७ कर्मकाण्ड, शिवाग्नि भावन, तिल घी  
संस्कार १४८-१४९ स्तुव स्तुवा संस्कार, पूर्णाहुति मन्त्रचक्र सन्तर्पण  
१४९-१५० चरु, होम, बद्धनेत्र शिष्यका प्रवेश, पुष्पांजलि, मन्त्रसन्निधि  
१५०-१५२ शिष्यपाश दाह, गुरु शिष्येक्यभाव १५२-१५३ स्वप्न, अस्त्रसे  
स्वप्ननिष्कृति, शिष्य शरीरमें प्राणक्रमसे प्रवेश, ४८ संस्कार, समयो  
१५४-१५६ मन्त्र ( गुरुमन्त्र ) गुरुभक्तिविधान १५६-१५८ शिष्यकर्त्तव्य  
१५८-१६० सामयिक विधि १६०-१६१ उपसंहार १६२

**चतुर्दशमाह्निकम्** [चोदहवां आह्निक] पुत्रकदीक्षा प्रकरण १६३-१७७,  
तन्त्रालोककी चर्चा और दीक्षाविधि १६३-१६५ अध्वान्यास और  
त्रिशूल, अरा और उनमें देवीका अधिष्ठान १६५-१६६ मध्य अरा-पूजन,  
पञ्चाधिकरण अनुसन्धि, वित्तशाठ्य निषेध, पशुबलि १६६-१६८  
वपाहोम, परोक्षदीक्षा, भोगेच्छु मुमुक्षुविचार १६८-१७० गुरु शिष्य  
ऐक्य विश्रान्ति १७१-१७२ भोगेच्छुदीक्षा १७२-१७३ योजनिका क्रम,  
पूर्णाहुति, पुत्रकदीक्षाका उपसंहार १७३-१७४ शिवात्मभाव प्राप्ति  
१७५-१७६ भैरवभाव १७६-१७७

**पञ्चदशमाह्निकम्** [पन्द्रहवां आह्निक] सप्रत्यय ( सद्यः समुत्क्रमण )  
प्रकरण १७८-१८३

शिष्य चैतन्य विधान, योजनिका पूर्णाहुति १७८-१७९ बुभुक्षु,  
शिवहस्तदानविधि १८०-१८२ निर्बीज दीक्षा, मर्मकर्त्तनविधि १८२-१८३

**षोडशाह्निकम्** [ सोलहवां आह्निक ] दीक्षा प्रकाशन १८४-१९४

परोक्षदीक्षाभेद—१—जीवित, २—मृत १८४-१८५ मृत दीक्षामें  
अधिवास आदि और चक्र प्रक्रिया, जाल नामक प्रयोग १८५-१८८  
परमेश्वर ही गुरु रूप १८९-१९० मृतोद्धरण १९०-१९१ जीवित  
दीक्षाका क्रम १९१-१९३ परोक्षदीक्षाका अधिकारी गुरु १९३-१९४

**सप्तदशमाह्निकम्** [ सत्रहवां आह्निक ] लिङ्गोद्धार प्रकरण पृ०  
१९५-१९७

अनधिकृत अधर शासन, उनसे शिष्यका उद्धार, पूर्व स्वीकृत दीक्षाका  
जलमें प्रक्षेप, अन्य कार्य १९५-१९६ शिवीकृत अग्नि, मन्त्र और



जप तथा होम, लिङ्गोद्धार, अधिवास और दीक्षा १९६—१९८ अधरस्थ  
भी दीक्ष्य १९८—१९९ उपसंहार श्लोक १९९

अष्टादशमाह्निकम् [ अठारहवाँ आह्निक ] अभिषेक प्रकरण पृ०  
२००—२०४

अनुग्रहका अधिकार २००—२०१ छमाही विधि, दीक्षितको विद्या-  
व्रत, दीक्षितकी ज्ञानदानमें परीक्षा २०१-२०२ उपसंहार श्लोक २०४

एकोनविंशमाह्निकम् [ उन्नीसवाँ आह्निक ]—श्राद्ध दीक्षा प्रकाश  
प्रकरण पृ० २०५—२११

विंशमाह्निकम् ( बीसवाँ आह्निक ) शेषवर्त्तनप्रकाशन प्रकरण  
२१२—२४०

नित्य नैमित्तिक और काम्य शेषवर्त्तन, २१२-२१४ गुरुमुखसे शिष्यको  
मन्त्रार्पण, तन्मयोभावाभ्यास और अर्चन २१४-२१५ परमोपादेय हृदयका  
भाव २१६-२१७ देहसदनमें देवार्चन २१७-१८ स्थण्डिलयाग २१८-२१९  
परमसंस्कार २१९-२२१ पर्वविधि २२१-२२३ अनुपूर्व २२३-२२४ चक्रयाग  
में पूज्य २२४-२२५ नरशक्ति शिवात्मक त्रितयमेलक, तर्पण, चक्रभ्रमण  
२२५-२२६ भद्र, वेल्लितशुक्ति, वीरसंकरयाग २२६-२२८ मूर्तियाग,  
शक्तिपातमें गुरुपदेश २२८-२२९ पवित्रक विधि २२९-२३२ अनुयागमें  
विशेष कर्त्तव्य २३३ व्याख्याविधि २३३-२३५ समयनिष्कृति २३६-२३८  
गुरुपूजाविधि २३८-२३९ उपसंहारश्लोक २३९-२४०

एकविंशमाह्निकम् ( इक्कीसवाँ आह्निक ) शेषवर्त्तन प्रकाशन प्रकरण  
२४१-२५१

आगम प्रामाण्य २४१-२४२ समस्त आगमोंका एकेश्वरकार्यत्वमें  
प्रामाण्य २४३-२४५ आगमप्रसिद्धिशास्त्रार्थ २४५-२४८ प्रसिद्धियाँ और  
परिणाम २४८-२४९ उपसंहार २५०-२५१

द्वाविंशमाह्निकम् ( बाइसवाँ आह्निक ) कुलयाग प्रकाशन प्रकरण  
२०२-२८३

कौलिक प्रक्रिया और उपासना २५२-२५४ प्राणसंविद् देहैक्यभाव  
२५४-२५६-ब्राह्ममन्त्रोच्चारका कारण २५६—२५९ करणचक्रानुबोध,

देहचक्र, मन्त्रचक्र सर्वं संविन्मय २५९—२६३ बाह्ययाग २६३—२६४  
 चक्रानुचक्रपूजन २६४—२६७ शक्तिका लक्षण २६७—२६८ चक्रानुसन्धान  
 २६८—२६९ संविद्चक्रानुप्रवेश २६९—२७० यामलशक्तिशक्तिमान् संघट्ट  
 २७१—२७२ शान्तोदितविमर्श २७२—२७३ देवोचक्र और मन्त्रचक्र  
 २७३—२७४ खेचरमुद्रा योगक्रम २७५—२७६ नादभैरव २७६—२७८  
 खेचरो मुद्रासे सिद्धि २७८—२७९ यामलयागपूर्णता २७९—२८१ सप्तम  
 सर्वोत्तम कुलयाग २८१—२८२ उपसंहार श्लोक २८२—२८३